

Study Material For B.A. II

Sub: Sanskrit, Paper. III

Date

06.06.2020

Paper. 3rd

Dr. Savitri Singh

Associate Professor

Dept. of Sanskrit

R.M.C. SASARAM

Topic: शुक्रासोपदेश के आधार पर मन्त्र लक्ष्मी के स्वभाव को (विशेषता) वर्णन

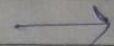
अतिप्रयत्नविवृतपि परमेश्वरगृहेषु विविधजन्यजनगण-
मन्थुपानमन्त्रैव परिस्खलति । पाल्हायमिवोपशिक्षितुमसिद्धारासु
निवसति ।

बड़े-बड़े व्यक्तियों के घरों में अति प्रयत्न से रखी गई यह लक्ष्मी मानों अनेक मदगजों के जाण्डह्वल पर बहने वाले मद जल को पीने से मतवाली बनी हुई लक्ष्मणी सी रहती है। क्रूरता की शिक्षा देने के लिए मानों तलवारों की चार पर निवास करती है।

विवरूपत्वमिव ग्रहीतुमाश्रिता नारायणधूर्तिम् ।

अप्रत्ययबहुला च दिवसान्तकमलमिव समुपचितमूलदण्ड-
कौशामण्डलमपि मुञ्चति भूभुजम् ।

विविधरूप वाली होने के कारण ही तो यह लक्ष्मी पुत्र नारायण का प्राप्त हुई है। विश्वासहीन यह जिस प्रकार सन्तानकाल में बड़े हुए मूलदण्डकौशामण्डल वाले कमल अर्थात् अपने निवास स्थान को छोड़ देती है। उसी प्रकार बड़े हुए भित्त-कर-भाण्डागार तथा साम्राज्य वाले राजा को भी छोड़ देती है।



लेतेव विटपकमध्यशोभति । उगैव कसुजनन्यपि तर्हा-
बुद्धिबुद्धयन्त्रला ।

यह जैसे जल बूझा पर आरोहण करती है। उसी प्रकार यह भी नीचे पुत्रों का आलिंगन करती है। कसु जनी होकर भी जिस उग जिस प्रकार तरंगों और बुद्धियों से चंचल है उसी प्रकार यह भी चंचल है। "दिवसकरगतिरिव प्रकटितविविधसंक्रान्तिः । पाताल-
गुहैव तमोबहुला ।"

सूर्य की गति के समान यह लक्ष्मी विभिन्न राशियों के समान पुत्रों में संक्रमण करती- दृष्टांग लगाती है तथा पाताल-कदर के समान अन्धकार अथवा तमोगुण से पूर्ण है।

हिडिम्बेव भीमसहस्रैर्हामि हृदया । प्रावृडिवाग्नि-
श्च्युतिकारिणी । -पुष्टपिशाचीव दशितानि कपुत्रसोऽप्यक्र-
स्वल्पसख्यमुन्मतीकरोति ।

यह लक्ष्मी भीम के साहस मात्र पर कुं हो जीने वाली हिडिम्बा के समान है। वर्जकाल में जित प्रकार खिली सगमत्र कोंधकर गायक हो जाती है उसी प्रकार लक्ष्मी भी थोड़ी देर को अपनी चमक दिखा जाती है। इसके अतिरिक्त जिस प्रकार पिशाचिनी अनेक पुत्रों की उंचई दिखाकर अल्प बुद्धि वाले पुत्रों को उन्नत बना देती है। उसी प्रकार यह लक्ष्मी भी अनेक पुत्रों की प्रोष्ठता दिखलाकर अल्प बुद्धि वाले पुत्रों को पाजल बना देती है।